

UPSSSC

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

सामान्य हिन्दी

ईबुक

राजस्व लेखपाल

2022

By naukaritak.com

विषय-क्रम

1. समास
2. पर्यायवाची
3. विलोम शब्द
4. तत्सम एवं तद्भव शब्द
5. संधियां
6. वाक्यांशों के लिए एक शब्द निर्माण
7. लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे
8. वाक्य संशोधन
9. लिंग
10. वचन
11. कारक
12. काल
13. वर्तनी त्रुटि से समन्वित
14. अनेकार्थी शब्द
15. अपठित गद्यांश

समास (Compound)

समास की परिभाषा - दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बनने वाले नए अर्थपूर्ण शब्द को ही समास कहते हैं।

जैसे - कार्य + कुशल = कार्यकुशल (जिसका अर्थ है कार्य में कुशल)

समास शब्द सम और और अस से मिलकर बना है। जिसमे सम का अर्थ भली प्रकार और अस का अर्थ फेंकना है। अर्थात् जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए शब्द को जब अलग-अलग लिखते हैं, तो उसका वही अर्थ होता है, जो संक्षेप में लिखने पर था।

जैसे - संक्षेप में राजपुत्र और अलग-अलग राजा का पुत्र इसमें दोनों शब्दों का अर्थ सामान है।

इस प्रकार से समास का शाब्दिक अर्थ संक्षेप होता है।

सामासिक या समस्त पद - समास के नियमों से जो नया शब्द बनता है उसे ही सामासिक या समस्त पद कहते हैं।

समास विग्रह - समस्त पद को अलग-अलग करने की प्रक्रिया ही समास विग्रह कहलाती है।

जैसे - राजपुत्र (समस्त पद) का विग्रह - राजा का पुत्र

समास की रचना - यह दो पदों (पूर्वपद और उत्तर पद) से मिलकर बनता है।

जैसे - राजपुत्र में पूर्वपद राज और उत्तर पद पुत्र है।

समास विभक्तियाँ - जब समस्त पद के पूर्वपद और उत्तर पद को अलग-अलग करते हैं, तो पूर्वपद और उत्तर पद के बीच में जो शब्द आता है उसे ही विभक्तियाँ कहते हैं।

जैसे - राजपुत्र का विग्रह = राजा का पुत्र यहाँ पर पूर्वपद राजा और उत्तरपद के बीच का शब्द का है।
अतः इसमें का ही विभक्ति है और इस विभक्ति के माध्यम से ही समास के प्रकार को पहचाना जाना जाता है।

समास के प्रकार - समास छः प्रकार का होता है:

1. अव्ययीभाव
2. तत्पुरुष
3. द्वन्द्व
4. बहुव्रीहि
5. कर्मधारय
6. द्विगु

(1) अव्ययीभाव समास - इस समास का पहला पद अर्थात् पूर्वपद प्रधान होता है।

इसकी पहचान - शब्द का पूर्वपद अनु, आ, प्रति, हर, भर, यथा और आवत आदि होता है।

समस्त पद	पूर्वपद	उत्तर पद
अनुकूल	अनु	कूल
आजन्म	आ	जन्म
प्रतिदिन	प्रति	दिन
भरपेट	भर	पेट
यथासंभव	यथा	संभव
प्रतिकूल	प्रति	कूल

(2) तत्पुरुष समास

इस समास का बाद का अर्थात् उत्तरपद प्रधान होता है। इस समास के छः भेद होते हैं:

नोट - तत्पुरुष समास के छः भेद को कारक की विभक्ति (पूर्वपद और उत्तरपद के बीच का मुख्य शब्द) के आधार पर पहचाना जा सकता है।

(a) कर्म तत्पुरुष समास - इसको कारक की विभक्ति को द्वारा पहचाना जा सकता है।

समस्त पद	विग्रह	कारक की विभक्ति
स्वर्गप्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त	को
मोक्षप्राप्त	मोक्ष को प्राप्त	को
तेलचट्टा	तेल को चाटने वाला	को
गगनचुम्बी	गगन को चूमने वाला	को
यशप्राप्त	यश को प्राप्त	को
गृहगत	गृह को आगत	को
जेबकतरा	जेब को कतरने वाला	को
रथचालक	रथ को चलाने वाला	को
गिरहकट	गिरह को काटने वाला	को

(b) करण तत्पुरुष समास - इसको कारक की विभक्ति से या के द्वारा पहचाना जा सकता है।

समस्त पद	विग्रह	कारक की विभक्ति
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत या तुलसी	द्वारा
रसभरा	रस से भरा	से

रोगपीड़ित	रोग से पीड़ित	से
रोगग्रस्त	रोग से ग्रस्त	से
करुणापूर्ण	करुणा से पूर्ण	से
भयाकुल	भय से आकुल	से
सुररचित	सुर द्वारा रचित	द्वारा
रेखांकित	रेखा से अंकित	से
मनचाहा	मन से चाहा	से
पददलित	पद से दलित	से
मदांध	मद से अँधा	से
शोकाकुल	शोक से आकुल	से
क्षुधापीड़ित	क्षुधा से पीड़ित	से
अकालपीडित	अकाल से पीड़ित	से

(c) सम्प्रदान तत्पुरुष समास - इसको कारक की विभक्ति के लिए के जरिये पहचाना जा सकता है।

समस्त पद	विग्रह	कारक की विभक्ति
शिवअर्पण	शिव के लिए अर्पण	के लिए
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	के लिए
मार्गव्यय	मार्ग के लिए व्यय	के लिए
रसोईघर	रसोई के लिए घर	के लिए
विधानसभा	विधान के लिए सभा	के लिए

सभाभवन	सभा के लिए भवन	के लिए
गोशाला	गो के लिए शाला	के लिए
पुत्रलोक	पुत्र के लिए लोक	के लिए
मालगोदाम	माल के लिए गोदाम	के लिए
राहखर्च	राह के लिए खर्च	के लिए
स्नानघर	स्नान के लिए घर	के लिए
डाकगाड़ी	डाक के लिए गाड़ी	के लिए
परीक्षा भवन	परीक्षा के लिए भवन	के लिए
हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी	के लिए
प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला	के लिए
यज्ञशाला	यज्ञ के लिए शाला	के लिए
मालगोदाम	माल के लिए गोदाम	के लिए
शिक्षालय	शिक्षा के लिए आलय	के लिए
विद्यालय	विद्या के लिए आलय	के लिए

(d) अपादान तत्पुरुष समास - इसको कारक की विभक्ति से (किसी चीज से अलग का भाव) के जरिए पहचाना जा सकता है।

समस्त पद	विग्रह	कारक की विभक्ति
पदच्युत	पद से च्युत	से अलग
धनहीन	धन से हीन	से

गृह विहीन	गृह से विहीन	से
चिंता मुक्त	चिंता से मुक्त	से
बलहीन	बल से हीन	से
नेत्रहीन	नेत्र से हीन	से
देशनिकाला	देश से निकाला	से
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त	से
गुणहीन	गुण से हीन	से
पापमुक्त	पाप से मुक्त	से
जलहीन	जल से हीन	से
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट	से
कर्म विमुख	कर्म से विमुख	से
दोषमुक्त	दोष से मुक्त	से
बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त	से

(e) सम्बन्ध तत्पुरुष समास - इसको कारक की विभक्ति का , की , के द्वारा पहचाना जा सकता है।

समस्त पद	विग्रह	कारक की विभक्ति
राजपुत्र	राजा का पुत्र	का
राजाज्ञा	राजा की आज्ञा	की
राजकुमार	राजा का कुमार	का

देश रक्षा	देश की रक्षा	की
गृहस्वामी	गृह का स्वामी	का
विद्यासागर	विद्या का सागर	का
पराधीन	पर के अधीन	के
गंगाजल	गंगा का जल	का
अन्नदाता	अन्न का दाता	का
देशसेवा	देश की सेवा	की
लोकनायक	लोक का नायक	का
रामराज्य	राम का राज्य	का
वीरपुत्र	वीर का पुत्र	का
सभापति	सभा का पति	का
सेनानायक	सेना का नायक	का
सूर्योदय	सूर्य का उदय	का
देवालय	देव का आलय	का
राजाध्यक्ष	राजा का अध्यक्ष	का
समाजोद्धार	समाज का उद्धार	का

(f) अधिकरण तत्पुरुष समास - इसको कारक की विभक्ति में , पर द्वारा पहचाना जा सकता है।

समस्त पद	विग्रह	कारक की विभक्ति
शोकमग्न	शोक में मग्न	में

पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम	में
आपबीती	आप पर बीती	पर
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश	में
लोकप्रिय	लोक में प्रिय	में
धर्मवीर	धर्म में वीर	में
कलाश्रेष्ठ	कला में श्रेष्ठ	में
पुरुषसिंह	पुरुषों में सिंह	में
कविश्रेष्ठ	कवियों में श्रेष्ठ	में
नगरप्रवेश	नगर में प्रवेश	में
रणशूर	रण में शूर	में
सर्वोत्तम	सबों में उत्तम	में
कलाप्रवीण	कला में प्रवीण	में
शोकमग्न	शोक में मग्न	में
कार्यदक्ष	कार्य में दक्ष	में

कर्मधारय समास

- इस समास का बाद का अर्थात् उत्तर पद प्रधान होता है।
- इस समास का प्रथमपद विशेषण और दूसरा विशेष्य अथवा संज्ञा होता है।

कर्मधारय समास = विशेषण + विशेष्य (संज्ञा)

उदहारण - महाकवि = महान (विशेषण) है, जो कवि (संज्ञा)

पहचान - इसके विग्रह में अधिकतर है जो एकसाथ आता है।

कर्मधारय समास के कुछ महत्वपूर्ण शब्द

समस्त पद	विग्रह
महाकवि	महान है जो कवि
महौषधि	महान है जो औषधि
पीतसागर	पीत है जो सागर
नराधम	अधम है जो नर
पीताम्बर	पीत है जो अम्बर
महावीर	महान है जो वीर
नीलकमल	नीला है जो कमल
परमेश्वर	परम है जो ईश्वर
महात्मा	महान है जो आत्मा
नीलकण्ठ	नीला है जो कण्ठ
लालमणि	लाल है जो मणि
महादेव	महान है जो देव
अधमरा	आधा है जो मरा
परमानन्द	परम हो जो आनन्द

पहचान

- कर्मधारय समास में में एक पद उपमान और दूसरा उपमेय होता है।
- जब उपमान और उपमेय की तुलना हो, तो इसके विग्रह में के समान , के सदृश आता है।

समस्त पद	विग्रह
चरणकमल	कमल के सामान चरण
मृगलोचन	मृग के सामान लोचन
वायुवेग	वायु के सामान वेग
लतादेह	लता के सदृश देह
चन्द्रमुख	चन्द्रमा के सदृश मुख
लौहपुरुष	लोहे के सामान पुरुष
विद्यारत्न	विद्या के सदृश रत्न
कमलनयन	कमल के सामान नयन
प्राणप्रिय	प्राण के सामान प्रिय

द्विगु समास

- इस समास का पूर्वपद संख्यावाचक और अंतिम पद संज्ञा होता है।
- इसका उत्तरपद प्रधान होता है।
- द्विगु समास से समूह का बोध होता है।

समस्त पद	विग्रह
चतुर्दिक	चारों दिशाओं का समाहार
त्रिफला	तीन फलों का समाहार
त्रिभुज	तीन भुजाओं का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार

अठन्नी	आठ आंनों का समाहार
नवग्रह	नव ग्रहों का समाहार
पंचवटी	पांच वटों का समाहार
सप्तसिंधु	सात सिन्धुओं का समूह
दोपहर	दो पहरों का समूह
त्रियोगी	तीन युगों का समाहार
चतुर्वेद	चार वेदों का समाहार
पंचपात्र	पांच पात्रों का समाहार
पंचमढ़ी	पांच मढ़ियों का समूह
तिरंगा	तीन रंगों का समूह
सप्ताह	सात दिनों का समूह
सप्तऋषि	सात ऋषिओं का समूह
नवरत्न	नव रत्नों का समाहार

द्वन्द्व समास

- इस समास के दोनों अर्थात् पूर्वपद एवं उत्तरपद प्रधान होते हैं।
- इसमें समस्त पद के विग्रह में और, अथवा या एवं आता है।

पहचान - इसमें पूर्वपद और उत्तरपद के बीच में योजक चिन्ह (-) लगा रहता है।

समस्त पद	विग्रह
रात-दिन	रात और दिन
पाप-पुण्य	पाप या पुण्य
सीता-राम	सीता और राम
माता-पिता	माता और पिता
राम-लक्ष्मण	राम और लक्ष्मण
राम-कृष्ण	राम और कृष्ण
भाई-बहन	भाई और बहन
देश-विदेश	देश और विदेश
लोटा-डोरी	लोटा और डोरी
लव-कुश	लव और कुश
नमक-मिर्च	नमक और मिर्च
सीता-राम	सीता और राम
भला-बुरा	भला अथवा बुरा
ऊंच-नीच	ऊंच या नीच
आगे-पीछे	आगे अथवा पीछे
छल-कपट	छल और कपट
अपना-पराया	अपना और पराया
खरा-खोटा	खरा या खोटा

बहुव्रीहि समास

- इसमें दोनों पद अप्रधान होता है।
- दोनों पद मिलकर एक नया अर्थ प्रकट करते हैं।
- दोनों पद मिलने के बाद जो नया शब्द बनता है वह किसी तीसरे के बारे में बताता है।

जैसे - दश (दस)+ आनन् (सर)= दशानन (दस सिरों वाला रावण)

महत्वपूर्ण बहुव्रीहि समास के शब्द

समस्त पद	विग्रह	अर्थ
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला	विष्णु
त्रिनेत्र	जिसके तीन नेत्र हैं	शंकर
दशमुख	जिसके दस मुख हैं	रावण
लम्बोदर	लम्बा है उदार जिसका	गणेश
सहस्रात्र	सहस्र हैं आँखें जिसकी	इंद्र
एक दन्त	एक है दांत जिसके	गणेश
खगेश	खगों का ईश जो हैं	गरुण
चंद्रशेखर	चंद्र है सर पर जिसके	शंकर
चंद्रमौलि	चंद्र हैं मौली पर पर जिसके	शंकर
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके	सरस्वती
शूलपाणि	शूल है पाणि में जिसके	शंकर
महावीर	महान वीर हैं जो	हनुमान

पंकज	पंक जो पैदा हो	कमल
अनहोनी	न होने वाली घटना	कोई विशेष घटना
गिरिधर	गिरी को धारण करने वाला	कृष्ण
पीताम्बर	पीत है अम्बर जिसका	कृष्ण
निशाचर	निशा में विचरण करने वाला	राक्षस
चौलड़ी	चार है लड़ियाँ जिसमे	माला
त्रिलोचन	तीन हैं लोचन जिसके	शिव
विषधर	विष को धारण करने वाला	सर्प
मृगेंद्र	मृगों का इंद्र	सिंह
घनश्याम	घन के सामान श्याम है जो	कृष्ण
मृत्युंजय	मृत्यु को जीतने वाला	शंकर

पर्यायवाची शब्द

पर्यायवाची - जो शब्द समान अर्थ के कारण किसी दूसरे शब्द की जगह ले लेते हैं उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं या समान अर्थ प्रदान करने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द अथवा समानार्थक शब्द कहलाते हैं।

अ से पर्यायवाची शब्द

- अतिथि – मेहमान ,पाहुन ,आगंतुक, अभ्यागत।
- अश्व- घोड़ा,आशुविमानक, तुरंग, घोटक, हय, तुरंगम, वाजि, सैंधव, रविपुत्र।
- अधर्म – पाप ,अनाचार, अनीत, अन्याय, अपकर्म, जुल्म।
- अचल – अडिग ,अटल ,स्थिर ,दृढ, अविचल।
- अनुपम- अनोखा, अनूठा, अपूर्व, अद्भुत, अद्वितीय, अतुल।
- अमृत- मधु, सुधा, पीयूष ,अमी, सोम ,सुरभोग।
- अंबा – माता, जननी, मां, जन्मदात्री, प्रसूता।
- अलंकार- आभूषण, भूषण, विभूषण, गहना, जेवर।
- अहंकार- दंभ, गर्व, अभिमान, दर्प, मद, घमंड, मान।
- अरण्य – जंगल, वन, कानन, अटवी, कान्तार, विपिन।
- अंकुश- नियंत्रण, पाबंदी, रोक, अंकुसी, दबाव, गजांकुश, हाथी को नियंत्रित करने की कील, नियंत्रित करने या रोकने का तरीका।
- अंतरिक्ष- खगोल, नभमंडल, गगनमंडल, आकाशमंडल।
- अंतर्धान- गायब, लुप्त, ओझल, अदृश्य।
- अंबर- आकाश, आसमान, गगन, फलक, नभ।
- अंतर्गत- शामिल, सम्मिलित, भीतर आया हुआ गुप्त।

आ से पर्यायवाची शब्द

- आयुष्मान- चिरंजीवी, दीर्घ, जीवी, शतायु, दीर्घायु।
- आदर्श- प्रतिमान, मानक, प्रतिरूप, नमूना।
- आयु – अवस्था, उम्र, वय, जीवनकाल, वयस्, जिन्दगी ।
- आभूषण – अलंकार, भूषण, गहना, आभरण, जेवर, टूम ।
- आँख – नेत्र, नयन, चक्षु, दृग, लोचन, अक्षि, नजर, अक्ष, चश्म।
- आकाश – नभ, अनन्तं, अभ्रं, पुष्कर, शून्य, तारापथ, अंतरिक्ष, आसमान, फलक, व्योम, दिव, खगोल, गगन, अम्बर।
- आत्मा – प्राणी, प्राण, जान, जीवन, चैतन्य, ब्रह्म, क्षेत्रज्ञ, सर्वज्ञ, सर्वव्याप्त, विभु, जीव ।
- आयुष्मान – चिरंजीव, दीर्घजीवी, शतायु, दाघायु।
- आदर्श- प्रतिमान, मानक, प्रतिरूप, नमूना ।
- आम – अतिसौरभ, रसाल, फलराज, आम्र, सहकार, पिकबंधु, च्युतफल ।

इ, ई से पर्यायवाची शब्द

- इंद्र- पुरंदर, शक्र, शचिपति, सुरपति, देवराज, मघवा, देवेश, शतक्रतु, सुत्रामा, वासव, सुरेश, वृहत्रा, अमरपति, पर्वतारि, वीडौजा, कौशिक, शतमन्यु।
- इंद्रधनुष- सूरधनु, इंद्रायुध, शक्रचाप, सप्तवर्ण।
- इंद्राणी- पुलोमजा, शची, इन्द्रा, इंद्रवधू, ऐन्द्री।
- इत्यादि- आदि, प्रभृति, वगैरह।
- इठलाना- चोंचले करना, नखरे करना, इतराना, ऐंठना, हाव-भाव दिखाना, शान दिखाना, शेखी, मदांध मारना, तड़क-भड़क दिखाना, अकड़ना, मटकाना, चमकाना।
- इनाम- पुरस्कार, पारितोषिक, पारितोषित करना, बख्शीश।
- इजाजत- स्वीकृति, मंजूरी, अनुमति।
- इज्जत- मान, प्रतिष्ठा, आदर, आबरू।
- इर्द-गिर्द- मंडलाकार मार्ग में, चक्करदार रास्ते पर, घेरे में, चतुर्दिक, चारों दिशाओं में।

- इशारा- संकेत, इंगित, लक्ष्य, निर्देश।
- इलजाम- आरोप, लांछन, दोषारोपण, अभियोग।
- ईर्ष्या- स्पर्धा, मत्सर, डाह, जलन, कुढ़न।

उ. से पर्यायवाची शब्द

- उत्पत्ति- उद्भव, जन्म, जनन, आविर्भाव।
- उपदेश- दीक्षा, नसीहत, सीख, शिक्षा, निर्देशन।
- उचित- ठीक, मुनासिब, वाज़िब, समुचित, युक्तिसंगत, न्यायसंगत, तर्कसंगत, योग्य।
- उपवन- बाग़, बगीचा, उद्यान, वाटिका, पुष्पोद्यान, फुलवारी, पुष्पवाटिका, गुलिस्तान, चमन, गुलशन।
- उपकार- भेंट, नजराना, भलाई, नेकी, उद्धार, अच्छाई, परोपकार, कल्याण, अहसान, आभार, तोहफ़ा।
- उपहास- परिहास, मजाक, खिल्ली।
- उदाहरण- मिसाल, नजीर, दृष्टान्त, कथा-प्रसंग, नमूना, दृष्टांत।
- उषाकाल -अरुणोदय, प्रातः, प्रभात।

ऊ से पर्यायवाची शब्द

- ऊसर - अनुर्वर, सस्यहीन, अनुपजाऊ
- ऊर्जा - शक्ति, ओज, स्फूर्ति
- ऊष्मा - तपन, उष्णता, ताप, गर्मी, ताव
- ऊँट - लम्बोष्ठ, महाग्रीव, उष्ट्र
- ऊधम - उपद्रव, उत्पात, हुल्लड, हंगामा, धमाचौकड़ी

ए से पर्यायवाची शब्द

- एक-सा - समान, एक जैसा, एकरूप, समरूप, अभिन्न
- एकता - एकरूपता, एकसूत्रता, ऐक्य, अभिन्नता, अभेद
- एकांत - सुनसान, शून्य, सुना, निर्जन, निमृत
- एहसान - अनुग्रह, कृतज्ञता, आभार

ऐ से पर्यायवाची शब्द

- ऐश्वर्य- वैभव, संपन्नता, धन-संपत्ति श्री महत्ता विभूति बड़प्पन समृद्धि दौलत।
- ऐश - विलाश, ऐयाशी, सुख-चैन

ओ से पर्यायवाची शब्द

- ओजस्वी- बलिष्ठ बलशाली बलवान ओजशाली शक्तिमान तेजस्वी।
- ओज - बल, ताकत, जोर, दम, पराक्रम, शक्ति, ऊर्जा
- ओछा - कमीना, छिछोरा, टुच्चा , क्षुद्र, हल्का

औ से पर्यायवाची शब्द

- औषधि- दवा, दवाई, भेषज
- और - एवं, तथा, साथ ही, अन्य, इतर, भिन्न

ऋ से पर्यायवाची शब्द

- ऋद्धि - सम्पन्नता, बढ़ती, बढ़ोत्तरी, वृद्धि, समृद्धि
- ऋषि - मुनि, मनीषी, साधु, महात्मा, सन्त, मन्त्रद्रष्टा